CBSE Test Paper 03

Ch-15 मेरे संग की औरतें

1. आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी?
2. मेरे संग की औरतें पाठ में लेखिका 15 अगस्त, 1947 का स्वतंत्रता समारोह देखने क्यों न जा सकी?
3. लेखिका ने अपनी नानी को कभी भी नहीं देखा फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं?
4. लेखिका की बहनें हीनभावना का शिकार नहीं हो पाईं, इसका क्या कारण था? मेरे संग की औरतें पाठ के आधार पर लिखिए।
5. सच, अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है - मेरे संग की औरतें पाठ के इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

CBSE Test Paper 03
Ch-15 मेरे संग की औरतें

Answer

1. लेखिका की परदादी लीक से हटकर चलने वाली महिला थी। उन्होंने लड़की पैदा होने की मन्नत इसलिए माँगी होगी क्योंकि उस समय ऐसी मन्नत माँगना और सबके सामने बताना अत्यंत साहसपूर्ण कार्य था। ऐसा करके वे सबसे अलग दिखने की चाह रखती होंगी। उनके ऐसा करने का दूसरा कारण यह रहा होगा कि वे स्वयं एक महिला थीं। उन्होंने महिला होकर स्वतंत्र जीवन जिया था तथा अपने जीवन में किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं देखी थी, इसलिए महिला होना उनके लिए गर्व की बात थी।

2. लेखिका को पारिवारिक विरासत में देश-प्रेम का गुण मिला था। उसमें आज़ादी के प्रति दीवानगी थी परंतु उसका दुर्भाग्य जब देश को आज़ादी मिली उस समय उसे टाइफाइट हो गया था। टाइफाइड को उस समय गंभीर बीमारी माना जाता था। डॉक्टर ने उसे घूमने, चलने-फिरने से मना कर दिया था। डॉक्टर की राय मानकर उसके माता-पिता उसे साथ न ले जा सके और वह स्वतंत्रता समारोह न देख सकी।

3. लेखिका ने भले ही अपनी नानी को न देखा था, पर अपनी माँ, पिता जी आदि से उनके बारे में सुनकर बहुत कुछ जान गई थी। लेखिका के अपनी नानी के व्यक्तित्व से प्रभावित होने के निम्नलिखित कारण थे-

   i. लेखिका की नानी अपनी बेटी (लेखिका की माँ) की शादी 'आज़ादी के सिपाही' से कराना चाहती थी। इससे उनका स्वतंत्रता के लिए जुनूनी होने का पता चलता है।
   ii. लेखिका की नानी को अपनी बेटी की हमेशा चिंता रहती थी। वे ममतामयी माँ थीं।
   iii. उनकी नानी परदानशीं, अनपढ़, परंपरागत ढंग से रहने वाली महिला थीं, पर वे निजी जीवन में आजाद ख्यालों वाली थीं।

4. लेखिका और उसकी बहनें हीनभावना का शिकार इसलिए नहीं हो पाईं क्योंकि लेखिका का जन्म उसकी परदादी द्वारा माँगी गई मन्नत (दुआ) के फलस्वरूप हुआ था। उसका भरपूर आदर-सत्कार हुआ। लेखिका की नानी देशभक्त तथा स्वाभिमानी महिला थीं। उनके मन में आजादी के प्रति गहरा लगाव था। इसी कारण लेखिका की माँ की शादी होनहार स्वतंत्रता सेनानी से हो सकी।
   इससे आजादीप्रियता का यह गुण उन्हें विरासत में मिल गया। इसके अलावा लेखिका तथा उसकी बहनों को सशक्त पारिवारिक संस्कार मिले, जिससे उन्हें हीनभावना छू भी न सका।

5. लेखिका अपने जीवन में इस बात को बहुत पसंद करती थी कि 'सच, अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है।' लेखिका की बहन और लेखिका इसके उदाहरण हैं।
   लेखिका की बहन रेणु जिस काम को सोचती थी, उसे करके ही रहती थी। कोई कितना भी समझाता रहे पर वह नहीं मानती थी। इसमें उसकी ज़िद्द कम दृढ़ निश्चय अधिक झलकता है। एक बार वह बारिश में दो मील दूर स्कूल जाने की

ज़िद्द पर पैदल जाने के लिए अड़ी रही। बारिश में गई और स्कूल बंद देखकर वापस आ गई। इस तरह वह मंजिल की ओर अकेले बढ़ने की दिशा में उत्सुक दिखती है। लेखिका भी जीवन की राह पर अकेले चलते हुए डालमिया नगर में स्त्री-पुरुषों के नाटक खेलकर सामाजिक कार्य हेतु धन एकत्र किया तथा कर्नाटक में अथक प्रयास से अंग्रेज़ी-कन्नड़-हिंदी तीन भाषाएँ पढ़ाने वाला स्कूल खोलकर उसे मान्यता दिलाना उनके स्वतंत्र सोच रखने तथा लीक से हटकर चलने वाले व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है।